अध्याय 4

परमेश्वर के द्वारा मूसा की बुलाहट (भाग 2)

अध्याय 4 में मूसा की बुलाहट की कहानी जारी रहती है। उसने दो और बहाने प्रस्तुत किए कि वह क्यों परमेश्वर के लोगों की मिस्र से बाहर निकलने में अगुवाई नहीं कर सकता था। उसका पहला बहाना यह था कि इस्राएल के लोग उसका विश्वास नहीं करेंगे। उसकी इस आपत्ति के उत्तर में, परमेश्वर ने मूसा को तीन चिन्ह दिए जिन्हें वह दिखा सकता था: (1) उसकी लाठी एक साँप बन जाएगी (4:1-5); (2) उसके हाथ को कोढ़ हो जाएगा (4:6-8); और (3) और जब वह जल को उन्ड़ेलेगा तो वह लहू बन जाएगा (4:9)। मूसा का दूसरा बहाना यह था कि वह अच्छा वक्ता नहीं था, और बोलने में धीमा था (4:10, 11)। परमेश्वर ने यह कहकर उत्तर दिया कि जब मूसा बोलेगा तो वह उसके संग रहेगा (4:12)। अंत में, मूसा ने कहा, "किसी और को भेज दे," एक ऐसा उत्तर जिसने परमेश्वर को अति क्रोधित कर दिया (4:13, 14)। इसके बाद परमेश्वर ने मूसा का प्रतिनिधि होने के लिए हारून को दिया (4:14-17)।

कहानी आगे मूसा के मिद्यान से निकलने की ओर मुड़ती है। मूसा ने अपने ससुर, यित्रो से मिस्र लौट जाने की अनुमति मांगी और उसे अनुमति मिल गई (4:18)। परमेश्वर ने जब उसे उसके कार्य के पुनर्नियुक्त किया (4:19), मूसा, अपने साथ अपनी पत्नी और दो पुत्रों को लेकर निकल पड़ा (4:20)। जैसे ही वह निकला परमेश्वर ने मूसा को एक बार फिर से बताया कि उसे क्या करना था, और उसमें वह जानकारी भी जोड़ दी जो आगे घटित होगी (4:21-23)। इसके बाद, मार्ग में ही, परमेश्वर ने उसे मार दिया होता, परन्तु उसका जीवन तब बच गया जब सिप्पोरा ने उसके पुत्र का खतना कर दिया (4:24-26)।

यह अध्याय मूसा के लक्ष्य के आरम्भ के साथ बंद होता है। वह जंगल में अपने भाई हारून से मिला, और वे दोनों मिस्र में इस्राएलियों के पास गए। जब लोगों ने मूसा के चिन्हों को देखा, तो उन्होंने उस बात पर विश्वास किया जो उसने कही थीं। उनकी पीड़ा में परमेश्वर की उनके विषय में महान चिंता के विषय में सुनकर, उन्होंने उसकी आराधना की (4:27-31)।

मूसा का तीसरा प्रत्युत्तर: "वे मेरा विश्वास नहीं करेंगे" (4:1-9)

[1]तब मूसा ने उत्तर दिया, "वे मेरा विश्वास नहीं करेंगे और न मेरी सुनेंगे, वरन् कहेंगे, 'यहोवा ने तुझ को दर्शन नहीं दिया'।" [2]यहोवा ने उससे कहा, "तेरे हाथ में वह क्या है?" वह बोला, "लाठी।" [3]उसने कहा, "उसे भूमि पर डाल दे।" जब उसने उसे भूमि पर डाला तब वह सर्प बन गई, और मूसा उसके सामने से भागा। [4]तब यहोवा ने मूसा से कहा, "हाथ बढ़ाकर उसकी पूँछ पकड़ ले, ताकि वे लोग विश्वास करें कि तुम्हारे पितरों के परमेश्वर अर्थात् अब्राहम के परमेश्वर, इसहाक के परमेश्वर, और याकूब के परमेश्वर, यहोवा ने तुझ को दर्शन दिया है।" [5]जब उसने हाथ बढ़ाकर उसको पकड़ा तब वह उसके हाथ में फिर लाठी बन गया। [6]फिर यहोवा ने उससे यह भी कहा, "अपना हाथ छाती पर रखकर ढाँप।" अतः उसने अपना हाथ छाती पर रखकर ढाँप लिया; फिर जब उसे निकाला तब क्या देखा कि उसका हाथ कोढ़ के कारण हिम के समान श्वेत हो गया है। [7]तब उसने कहा, "अपना हाथ छाती पर फिर रखकर ढाँप।" उसने अपना हाथ छाती पर रखकर ढाँप लिया; और जब उस ने उसको छाती पर से निकाला तब क्या देखता है कि वह फिर सारी देह के समान हो गया। [8]तब यहोवा ने कहा, "यदि वे तेरी बात का विश्वास न करें, और पहले चिन्ह को न मानें, तो दूसरे चिन्ह का विश्वास करेंगे। [9]और यदि वे इन दोनों चिह्नों का विश्वास न करें और तेरी बात को न मानें, तब तू नील नदी से कुछ जल लेकर सूखी भूमि पर डालना; और जो जल तू नदी से निकालेगा वह सूखी भूमि पर लहू बन जायेगा।"

आयत 1. मूसा की इस क्षण तक चिंता फ़िरौन को उस पर **विश्वास** दिलाना नहीं थी, बल्कि इस्राएलियों को उस पर विश्वास दिलाना थी! आखिरकार, उसने एक दागी प्रतिष्ठा के साथ मिस्र छोड़ा था और वह प्रत्यक्ष रूप से चालीस वर्षों तक मिस्र नहीं लौटा था। यदि लोग इस बात के लिए आश्वस्त नहीं होते कि, **यहोवा**, उनके "पितरों का परमेश्वर" (4:4) मूसा के सामने **प्रकट** हुआ था, तो यदि फ़िरौन उन्हें जाने की अनुमति भी दे देगा तो भी वे उसकी नहीं **सुनेंगे** और उसके पीछे नहीं चलेंगे। वास्तव में, जंगल में उनके समय के दौरान, मूसा में लोगों का भरोसा एक बड़ा विषय बनता रहा।

आयतें 2, 3. मूसा के प्रश्न के प्रति परमेश्वर का उत्तर उसे वह वस्तु देना था जिसकी आवश्यकता उसे इस्राएलियों को स्वयं पर विश्वास दिलाने के लिए थी: मूसा की चिन्ह दिखाने की क्षमता। उस समय से लेकर आगे तक, एक सच्चे भविष्यद्वक्ता का चिन्ह यह होता था कि वह विश्वसनीय चिन्ह दिखा सकता था। यीशु मूसा के समान ही एक भविष्यद्वक्ता था (व्यव. 18:15-22; प्रेरितों 3:22) इसी कारण उसने चिन्ह दिखाए ताकि लोग सुनेंगे और विश्वास करेंगे।

पहले चिन्ह के लिए, यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी कि वह अपनी **लाठी** (מַטֶּה, *मत्तेह)*, एक चरवाहे की छड़ी नीचे **फेंक** दे। मूसा मिद्यान में अपने ससुर की भेड़ें चरा रहा था (3:1), तो इस उपकरण को **हाथ** (יָד, *याद)* में पकड़े रहना स्वाभाविक

था। "हाथ" शब्द को इस अध्याय में ज़ोर डालने के लिए अकसर दोहराया गया है। परमेश्वर का "सामर्थी हाथ" मूसा के मानव "हाथ" के माध्यम से कार्य करने (देखें 3:19 की टिप्पणियाँ)। जब मूसा ने लाठी नीचे फेंक दी, तो वह एक **साँप** बन गई। स्वाभाविक तौर पर उसने भय में प्रतिक्रिया की और **वह उसके सामने से भागा**।

आयतें 4, 5. इसके बाद यहोवा ने मूसा से **उसे** [साँप को] **उसकी पूँछ से पकड़ने को कहा**। मूसा का परमेश्वर की सुरक्षा में विश्वास प्रमाणित है क्योंकि इस प्रकार के कार्य का परिणाम साँप के द्वारा काटा जाना भी हो सकता था। जब उसने आज्ञा का पालन किया, तो साँप फिर से **लाठी** में बदल गया। बाद में मूसा ने इस चिन्ह का प्रदर्शन इस्राएलियों के सामने किया और इसके कारण उन्हें **विश्वास** हो गया (4:29-31)। यही चिन्ह फ़िरौन के समक्ष भी प्रस्तुत किया गया था, परन्तु उसने नहीं सुनी (7:8-13)।

आयत 6. दूसरे चिन्ह में मूसा का **हाथ** भी सम्मिलित था, जिसे परमेश्वर ने उसकी **छाती** (חֵיק, *चेय्क)* पर रखने को कहा था। इस मामले में यह शब्द उस वस्त्र की तह का सन्दर्भ देता है जो उसकी छाती को ढांपे हुए था (देखें भजन 74:11; नीति. 6:27; 16:33)। जब मूसा ने अपना हाथ बाहर निकाला तो वह **कोढ़ के कारण हिम के समान श्वेत हो गया था**। यही विवरण गिनती 12:10 में भी मिलता हैं जहाँ परमेश्वर ने मरियम का न्याय किया था। इस त्वचा रोग की कठोरता हारून की इस प्रतिक्रिया से देखी जा सकती है: "और मरियम को उस मरे हुए के समान न रहने दे, जिसकी देह अपनी माँ के पेट से निकलते ही अधगली हो!" (गिनती 12:12)।

आयतें 7, 8. आगे, यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी कि वह इस प्रक्रिया को दोहराए। ऐसा करने के बाद, **उसका हाथ ... फिर से उसकी देह के समान हो गया था**। मूसा ने जब उसका हाथ उसकी पहली स्थिति में पहुँच गया तब निश्चय ही राहत का अनुभव किया होगा। परमेश्वर ने इसके बाद समझाया कि यदि इस्राएली **पहले चिन्ह** स्वीकार न करें, जो कि लाठी का साँप में बदलना था, तो वे **अन्तिम चिन्ह** उसके हाथ के कोढ़ी हो जाने को स्वीकार करेंगे। इस बात में कोई संदेह नहीं यह अन्तिम चिन्ह इस्राएलियों के सामने दिखाए गए उन चिन्हों में से था जिसका परिणाम उनका विश्वास था (4:29-31)।

आयत 9. तीसरे चिन्ह में मूसा का **नील नदी से जल** लेना सम्मिलित था। यह महत्वपूर्ण नदी मिस्र के खेतों की सिंचाई के लिए उपयोग की जाती थी, और इसकी वार्षिक बाढ़ मिट्टी को फिर से भरपूर कर देती थी। आगे, इस नदी का उपयोग यातायात के एक सुगम साधन के रूप में किया जाता था। इन सभी लाभों के कारण, नील को देवता के समान देखा जाता था। जब कभी मूसा नील से जल लेकर **सूखी भूमि**, पर **उंडेलेगा**, तो वह **लहू बन जाएगा**। यह मूल्यवान संसाधन एकदम बेकार हो जाएगा।

परमेश्वर ने उसको लोगों को मूसा को उसके प्रतिनिधि के रूप में ग्रहण करने के लिए तीन चिन्ह दिए। इन तीनों में सभी लोगों में वह विश्वास उत्पन्न करने के लिए प्रभावशाली थे जिसकी उन्हें आवश्यकता थी। इसके साथ ही, इन तीनों में

घातक, और नकारात्मक परिणाम भी सम्मिलित थे: एक लाठी का साँप बन जाना घातक था, और एक मनुष्य के हाथ का कोढ़ी हो जाना भयानक था, और जल का लहू में बदल जाना विनाशकारी था। हालाँकि, पहले दो मामलों में परिस्थितियाँ फिर से बदल दी गईं थीं। ये चिन्ह विपत्तियों का आदि रूप थे, जबकि तीसरा चिन्ह तो वास्तव में पहली विपत्ति बन गया (7:14-25)।

मूसा का चौथा प्रत्युत्तर: "मैं बोलने में निपुण नहीं हूँ" (4:10-12)

[10]मूसा ने यहोवा से कहा, "हे मेरे प्रभु, मैं बोलने में निपुण नहीं, न तो पहले था, और न जब से तू अपने दास से बातें करने लगा; मैं तो मुँह और जीभ का भद्दा हूँ।" [11]यहोवा ने उससे कहा, "मनुष्य का मुँह किसने बनाया है? और मनुष्य को गूँगा, या बहिरा, या देखनेवाला, या अंधा, मुझ यहोवा को छोड़ कौन बनाता है? [12]अब जा, मैं तेरे मुख के संग होकर जो तुझे कहना होगा वह तुझे सिखलाता जाऊँगा।"

आयत 10. अगला बहाना जो मूसा ने प्रस्तुत किया वह यह था कि वह **बोलने में निपुण नहीं था**, जिसका अर्थ "बोलने में निपुण" है (אִישׁ דְּבָרִים, *'ईश दे बारीम)*। उसने यह भी दावा किया कि वह **बोलने में भद्दा** है (כְּבַד־פֶּה וּכְבַד לָשׁוֹן, *केबाद पेह उकेबाद लाशोन)*। इस वाक्यांश का और अधिक वस्तुतः अनुवाद "भारी बोल या भारी जीभ का" में किया जा सकता है। सरना तीन सम्भावनाओं का सुझाव देते हैं: सम्भवतः उसे बोलने का दोष था, या वह मिस्री भाषाओं में अपना प्रवाह खो चुका था, या हो सकता है उसने केवल यह सोचा हो कि वह वक्ता के रूप में पर्याप्त नहीं था।[1] हालाँकि सरना ने कहा कि बोलने में निपुणता की कमी अप्रासंगिक थी क्योंकि उसका संदेश परमेश्वर की ओर से आया था (देखें यिर्म. 1:6-9)।

आयत 11. परमेश्वर ने इस बात की पुष्टि की और कहा कि वही मनुष्य को **गूंगा, बहरा, या देखनेवाला या अँधा बनाता है**। यद्यपि विश्वासी इस बात से सहमत होने के इच्छुक हैं कि परमेश्वर एक व्यक्ति को देखने वाला बनाता है, फिर भी वे इस बात की पुष्टि के लिए तैयार नहीं होते कि परमेश्वर एक मनुष्य को "गूंगा या बहरा ... अन्धा" बनाता है। हालाँकि, पुराना नियम एक समान रूप से यह सिखाता है कि जो कुछ होता है वह या तो परमेश्वर के कारण होता है या उसकी अनुमति से होता है (देखें अय्यूब 1:21, 22; आमोस 4:6)।

आयत 12. मूसा के बहानों के प्रति यहोवा के खण्डन यह स्पष्ट कर देते हैं परमेश्वर मूसा को वह कार्य पूर्ण करने के लिए सक्षम करेगा जिसे करने के लिए उसने उसे बुलाया है। ईश्वरीय सहायता के परिणाम स्वरूप, मूसा को नए नियम में एक ऐसे व्यक्ति के रूप में स्मरण किया जाता है "जो बोलने में शक्तिशाली" था (प्रेरितों 7:22; NIV)।

मूसा का पाँचवां प्रत्युत्तर: "किसी और को भेज दे" (4:13-17)

[13]उसने कहा, "हे मेरे प्रभु, कृपया किसी और को तू भेज।" [14]तब यहोवा का कोप मूसा पर भड़का और उसने कहा, "क्या तेरा भाई लेवीय हारून नहीं है? मुझे निश्चय है कि वह बोलने में निपुण है, और वह तुझ से भेंट के लिये निकला आता है; और तुझे देखकर मन में आनन्दित होगा। [15]इसलिये तू उसे ये बातें सिखाना; और मैं उसके मुख के संग और तेरे मुख के संग होकर जो कुछ तुम्हें करना होगा वह तुम को सिखलाता जाऊँगा। [16]वह तेरी ओर से लोगों से बातें किया करेगा; वह तेरे लिये मुँह और तू उसके लिये परमेश्वर ठहरेगा। [17]और तू इस लाठी को हाथ में लिए जा, और इसी से इन चिन्हों को दिखाना।"

आयत 13. मूसा परमेश्वर की आज्ञा को स्वीकार करने की अपनी अनिच्छा में बना रहा। जब उसने की परमेश्वर नई बुलाहट का उत्तर दिया, तो उसने इब्रानी शब्द אֲדֹנָי *(अदोनाई)* का उपयोग करते हुए परमेश्वर को "याहवेह" के रूप में जो कि परमेश्वर को पसन्द था सम्बोधित करने के बजाए **प्रभु** के रूप में सम्बोधित किया।[2] उसने किसी और को इस कार्य के लिए चुनने का सुझाव देते हुए, परमेश्वर की आज्ञा को अस्वीकार कर दिया।

जब एक निरे मनुष्य, मूसा को परमेश्वर अनंत सृष्टिकर्ता के द्वारा बुलाया गया था, तो उसने संकोच किया और बहाने बनाये, और आज्ञा पालन न करने का कोई तरीका खोजने का प्रयास करने लगा। पाठक को जो आशा होगी उसके विपरीत, परमेश्वर मूसा के साथ अति संयमी था, उसने उसके प्रत्येक बहाने और आपत्ति का उत्तर सांत्वना देने वाले शब्दों सहित उसकी प्रत्येक समस्या का हल करने की मंशा सहित दिया। मूसा के बहानों ने एक "पतले आवरण में छिपी विश्वास की कमी ...। [परिणामस्वरूप], को प्रदर्शित किया, यह अद्‌भुत है कि परमेश्वर ने मूसा के प्रश्नों और आपत्तियों के दौरान कितने संयम और कृपापूर्वक प्रतिक्रिया दी 3:1-4:17."[3]

आयत 14. मूसा द्वारा परमेश्वर के सामने किसी और को भेजने की विनती करने के बाद, यहोवा **का क्रोध मूसा के विरुद्ध भड़क उठा**। परमेश्वर एक सीमा तक ही संयम रखता है, परन्तु वह क्रोध कर सकता है और क्रोधित हो सकता है। उसके क्रोध के बावजूद, परमेश्वर ने मूसा के बहानों का उत्तर उसके प्रतिनिधि के रूप में उसके भाई **हारून** को भेजकर दिया। हारून का पहली बार कहानी में परिचय दिया गया; इस बिंदु तक, पाठक को केवल मूसा के माता-पिता और बड़ी बहन के विषय में ही ज्ञात था (2:1, 4)। हारून को **लेवीय** के रूप में वर्णन किया गया है, जो भविष्य में उसकी महायाजकीय सेवकाई के लिए मंच तैयार करता है (देखें 2:1, 2 पर टिप्पणियाँ)। परमेश्वर ने मूसा को सूचना दी की हारून उससे मिलने के लिए पहले से ही मार्ग में था, और उसका भाई उसे देखकर **प्रसन्न** होगा।

आयतें 15-17. मूसा ने बहाने बनाये कि वह क्यों परमेश्वर के लोगों की मिस्र से बाहर निकलने में अगुवाई नहीं कर सकता था, परन्तु परमेश्वर ने उन्हें आश्वासन

दिया कि वह उसके और हारून के **साथ** रहेगा। परमेश्वर ने मूसा को उसके भाई हारून से **बात करने** और **उसके मुँह में** शब्दों को रखने की आज्ञा दी। यह मूसा की जिम्मेदारी थी कि वह उन सभी शब्दों को अपने भाई को बताए जो परमेश्वर ने उससे कहे थे। हारून, मूसा के बदले में, **लोगों से बाते करेगा**। आज्ञा की श्रृंखला स्पष्ट थी: परमेश्वर, मूसा, हारून. अंत में, परमेश्वर ने मूसा को स्मरण करवाया कि उसे अपनी **लाठी** अपने साथ लेनी होगी जिसके माध्यम से परमेश्वर चमत्कारी **चिन्हों को** दिखाएगा।

मूसा के द्वारा परमेश्वर की बुलाहट को स्वीकार करना और उसका मिस्र के लिए प्रस्थान करना (4:18-26)

मूसा का प्रस्थान (4:18-20)

18तब मूसा अपने ससुर यित्रो के पास लौटा और उससे कहा, "मुझे विदा कर कि मैं मिस्र में रहनेवाले अपने भाइयों के पास जाकर देखूँ कि वे अब तक जीवित हैं या नहीं।" यित्रो ने कहा, "कुशल से जा।" 19और यहोवा ने मिद्यान देश में मूसा से कहा, "मिस्र को लौट जा; क्योंकि जो मनुष्य तेरे प्राण के प्यासे थे वे सब मर गए हैं।" 20तब मूसा अपनी पत्नी और बेटों को गधेपर चढ़ाकर मिस्र देश की ओर परमेश्वर की उस लाठी को हाथ में लिये हुए लौटा।

आयत 18. मूसा उस पर्वत से जहाँ उसकी भेंट यहोवा से हुई ही चल पड़ा और अपने **ससुर** से उस देश को छोड़ने की अनुमति मांगने के लिए **लौटा** जहाँ वह लगभग चालीस वर्ष से रह रहा था। भले ही मूसा एक वयस्क व्यक्ति था, और उसकी आयु अधिक थी, फिर भी उसने अपने ससुर के अधिकार के प्रति सम्मान का प्रदर्शन किया। इसकी प्रतिक्रिया में, **यित्रो** ने उसे आशीष दी और कहा: **"कुशल से जा।"**

आयत 19. परमेश्वर ने **मूसा** से एक बार और बात करना आवश्यक समझा, और उसे उस लक्ष्य को पूरा करने के लिए नियुक्त किया जिसके लिए उसने उसे वास्तव में बुलाया था। उदार आलोचक इस प्रकार के दोहराव को एक सम्पादक द्वारा अन्य स्रोतों के उपयोग के प्रमाण के रूप में देखते हैं। हालाँकि, प्रत्यक्ष तौर दोहराए गए इन वाक्यांशों की तीन अन्य तरीकों से व्याख्या की जा सकती है:

(1) प्राचीन लेखक दोहराव का उपयोग करने के द्वारा, आज के लेखकों के विपरीत जो कि शब्दों के मितव्यय को महत्व देते हैं, अभिव्यक्ति की सम्पूर्णता को महत्व देते थे।

(2) दोहराव आवश्यक हो सकता है। मनुष्यों में भूल जाने की प्रवृत्ति है और उन्हें बार-बार स्मरण दिलाए जाने की आवश्यकता पड़ती है।

(3) चूंकि प्रत्येक लेख में और सूचना जोड़ दी जाती थी, तो दोहराव निरे दोहराव नहीं थे। उदाहरण के लिए इन आयतों की तुलना करें:

3:10 में यहोवा ने कहा, "इसलिये आ, मैं तुझे फ़िरौन के पास भेजता हूँ कि तू मेरी इस्राएली प्रजा को मिस्र से निकाल ले आए।"

4:19 में यहोवा ने कहा, **"मिस्र को लौट जा; क्योंकि जो मनुष्य तेरे प्राण के प्यासे थे वे सब मर गए हैं।"**

4:21 में यहोवा ने कहा, "जब तू मिस्र में पहुँचे तब ध्यान रहे कि जो चमत्कार मैं ने तेरे वश में किए हैं उन सभों को फ़िरौन को दिखलाना।"

पहले वाक्यांश में, यहोवा ने कहा कि वह मूसा को मिस्र में उसके लोगों को छुड़ाने के लिए भेजेगा। दूसरे वाक्यांश में, उसने यह सूचना जोड़ दी कि जो लोग मूसा के प्राण के प्यासे थे वे मर चुके थे (देखें 2:15, 23)। तीसरे वाक्यांश में, उसने मूसा को उन चिन्हों का इस्तेमाल करने के और निर्देश दिए जो उसने उसे लक्ष्य पूरा करने की खातिर दिए थे।

आयत 20. परमेश्वर की बुलाहट के उत्तर में, **मूसा** मिस्र के लिए चल पड़ा, और उसने अपने साथ **अपनी पत्नी और दो पुत्रों को ले लिया**। दूसरे पुत्र का यह पहला वर्णन है। पहले पुत्र, गेर्शोम का वर्णन नाम सहित 2:22 में किया गया है. दूसरे का नाम एलीएज़र, 18:4 से पहले तक प्रकट नहीं किया गया है। शब्द कहता है कि **मूसा ने अपने हाथ में परमेश्वर की लाठी भी ली थी**। यह चरवाहे की लाठी परमेश्वर की लाठी बन गई थी, अधिकार और साधन का एक प्रतीक जिसके द्वारा मूसा उसकी सेवकाई के समस्त समय में चिन्ह दिखाएगा।

परमेश्वर की ओर से अगले निर्देश (4:21-23)

[21]तब यहोवा ने मूसा से कहा, "जब तू मिस्र में पहुँचे तब ध्यान रहे कि जो चमत्कार मैं ने तेरे वश में किए हैं उन सभों को फ़िरौन को दिखलाना; परन्तु मैं उसके मन को हठीला करूँगा, और वह मेरी प्रजा को जाने न देगा। [22]और तू फ़िरौन से कहना, 'यहोवा यों कहता है, कि इस्राएल मेरा पुत्र वरन् मेरा जेठा है, [23]और मैं जो तुझ से कह चुका हूँ कि मेरे पुत्र को जाने दे कि वह मेरी सेवा करे; और तू ने अब तक उसे जाने नहीं दिया, इस कारण मैं अब तेरे पुत्र वरन् तेरे जेठे को घात करूँगा'।"

आयतें 21-23. परमेश्वर ने **मूसा** को उसके आगे रखे कार्य के लिए तैयार किया। पहले, परमेश्वर ने मूसा को वह **चमत्कार** स्मरण दिलाए जिन्हें **दिखाने** के लिए उसने उसे पहले ही सक्षम किया था और कहा कि वह उन्हें **फ़िरौन** के लिए करेगा। चिन्हों के इस उपयोग ने उनके उद्देश्य को विस्तृत कर दिया; प्राथमिक तौर वे इसलिए दिए गए थे ताकि इस्राएली उन्हें देखें और मूसा का विश्वास करें। दूसरा, उसने यह कहते हुए कि **यहोवा उसके मन को हठीला** करेगा, मूसा को यह जानने दिया कि फ़िरौन उसकी नहीं सुनेगा। तीसरा, उसने अन्तिम विपत्ति - **पहलौठे की मृत्यु** के विषय में पहले ही बताया - जिसने एक तरह से यह घोषित किया कि मिस्र के पहलौठे की मृत्यु परमेश्वर के पहलौठे (**इस्राएल**) से किए गए उस दुर्व्यवहार का

दण्ड थी जो उसने फ़िरौन के हाथों सहा था। यह बाइबल के उस सिद्धांत का चित्रण करता है कि "क्योंकि मनुष्य जो कुछ बोता है वही काटेगा" (गला. 6:7)। परमेश्वर ने मूसा के लिए स्पष्ट किया, और इसी के समान उसके बाद के भविष्यद्वक्ताओं के लिए भी किया, कि उसके संदेश को आनन्द से ग्रहण नहीं किया जाएगा।

लहूवाला पति (4:24-26)

[24]तब ऐसा हुआ कि मार्ग पर सराय में यहोवा ने मूसा से भेंट करके उसे मार डालना चाहा। [25]तब सिप्पोरा ने एक तेज चकमक पत्थर लेकर अपने बेटे की खलड़ी को काट डाला, और मूसा के पाँवों पर यह कहकर फेंक दिया, "निश्चय तू मेरे लिए लहूवाला मेरा पति है।" [26]तब यहोवा ने उसको छोड़ दिया। उस समय खतने के कारण वह बोली, "तू लहूवाला पति है।"

आयतें 24-26. लहूवाले पति के विषय में यह अनुच्छेद निर्गमन के सबसे कठिन अनुच्छेदों में से एक है। अनुवादकों ने इस घटना के लिए व्याख्याओं का विस्तृत क्रम दिया है। एक अध्ययन बाइबल से लिए गई निम्नलिखित टिप्पणियाँ इसका एक नमूना हैं:

> [निर्गमन 4:24-26 है] एक प्राचीन परम्परा जो खतने के मूल (तुलना करें उत्पत्ति 17:9-14) को मूसा की मिद्यानी पत्नी से जोड़ती है ...। [निर्गमन 4:24] दुष्टात्मा के आक्रमण की प्राचीन आस्था को दर्शाती है ... जिसे समय पर किए गए एक अनुष्ठान से दूर कर दिया गया। वास्तव में खतना एक परिपक्वता या वैवाहिक अनुष्ठान था।[4]

इस अनुच्छेद की अन्य सूचित व्याख्याओं में निम्नलिखित बातें सम्मिलित है: (1) इससे पहले की मूसा को मिद्यान से जाने की अनुमति मिल सके, उसे मिद्यानियों के देवता को उस बालक का खतना करने के द्वारा प्रसन्न करना था जो मिद्यान में जन्मा था।[5] (2) यह कहानी वास्तव में मिद्यानी है। इसकी पृष्ठभूमि मिद्यानी है और यह पुस्तक में पहले से सम्बन्धित है; इस कहानी में देवता एक मिद्यानी ईश्वर है जिसका नाम "याहवेह" है।[6] (3) मूसा ने अपने पुत्र का खतना इसलिए नहीं किया था क्योंकि उसने उस पुत्र की प्रतिज्ञा स्थानीय मूर्ति से उस संधि के भाग के रूप में की थी जब यित्रो ने उसे अपनी पुत्री दी थी; इसी कारण, परमेश्वर को उसके द्वारा उसके पुत्र का खतना किए जाने की आवश्यकता इसलिए थी कि वह यह दर्शा सके कि उसने मूर्ति पूजा छोड़ दी थी।[7] यहोवा के स्वर्गदूत ने मूसा को उसके विश्वास और जब परमेश्वर ने उसे बुलाया तो इच्छा पूर्वक आज्ञाकारिता की कमी के कारण मार डालना चाहा।[8] इनमें से कोई भी व्याख्या सम्भव नहीं है, और यदि बाइबल की कहानियों को ऐतिहासिक ब्यौरों के रूप में स्वीकार किया जाए तो इनमें से अधिकतर व्याख्याएँ अस्वीकार की जानी चाहिए।

अनुवादों की विविधताएँ यह संकेत अवश्य करती हैं कि यह अनुच्छेद व्याकरण और धर्मशास्त्रीय ढंग से कठिन है। उदाहरण के लिए, कहानी इस सूचना

के साथ आरम्भ होती है: **यहोवा ने मूसा से भेंट करके उसे मार डालना चाहा।** यह कथन जटिल है। (1) यहोवा ने किसे मार डालना चाहा? अधिकांश टिप्पणीकार इस बात से सहमत हैं कि मूसा परमेश्वर के क्रोध का पात्र था, परन्तु सर्वनाम का पूर्वपद अस्पष्ट है। (2) यदि मूसा वही व्यक्ति था जिसे परमेश्वर ने मार डालना चाहा, तो वह ऐसा उसे उसके लोगों को मिस्र से बाहर निकाल लाने की आज्ञा देने के तुरंत बाद क्यों करेगा? (3) शब्द यह क्यों कहता है कि "यहोवा ने उससे भेंट की"? क्या परमेश्वर जो करना चाहता था वह स्वर्ग से नहीं कर सकता था। (4) यह वाक्यांश क्यों कहता है कि "यहोवा ने उसे मार डालना चाहा" या "उसे मारने का प्रयास किया"? (NRSV; जोर डाला गया है)। क्या कोई भी कार्य परमेश्वर के लिए बड़ा है? यदि परमेश्वर उसे मार डालना चाहता, तो उसने ऐसा क्यों नहीं किया? वह केवल इसकी "खोज" में या "प्रयास" क्यों कर रहा था? क्या इन शब्दों का यह अर्थ निकलता है कि परमेश्वर ने प्रयास किया और विफल हो गया?

इस वाक्यांश का अर्थ समझने के लिए, जिस पहले प्रश्न के उत्तर दिए जाने की आवश्यकता है वह ये है कि "क्या हुआ था?" शब्दों के द्वारा कौन सी ऐतिहासिक वास्तविकता प्रस्तुत की गई है? लेखक मानवीकृत भाषा का उपयोग कर रहा था; इसी कारण, उसने उस बात को जो परमेश्वर ने की उस तरह से रखा जिस तरह से एक मनुष्य इसे करता, ताकि मनुष्य इसे अधिक सहजता से स्वीकार कर सकें (इस प्रकार जैसे कि उत्पत्ति 11:5 कहती है परमेश्वर उतर आया और वह मीनार देखी जो मनुष्य बना रहे थे)। "यहोवा ने मूसा को मार डालना चाहा" संकेत करता है, इसके बाद, कि मूसा का अचानक किसी सम्भवतः प्राण घातक रोग से ग्रसित हो जाना या उस के ऊपर ऐसे किसी रूप में आक्रमण होना जिससे उसका जीवन खतरे में पड़ गया था। वह मरने वाला था। कौन रोग या चोट के माध्यम से लोगों को मारता है? पुराना नियम धर्मशास्त्र में, परमेश्वर ने ऐसा किया। जो कुछ भी हुआ, चाहे भला या बुरा, वह परमेश्वर ने किया था। यदि वह बुरा था, तो पश्चाताप और क्षतिपूर्ति करना पीड़ित व्यक्ति के प्रति परमेश्वर के मन के बदलने का कारण होगा।

इसी कारण, यह कहा जा सकता है कि परमेश्वर ने एक ऐसा कष्ट या चोट भेजी जिसका परिणाम मूसा का मृत्यु की कगार पर पहुँचाना हुआ। चूंकि **खतने** ने समस्या का हल कर दिया, तो यह निस्संदेह मूसा की ही असफलता थी कि वह अपने पुत्रों का खतना नहीं कर सका और जो कष्ट के आने का कारण बना। परमेश्वर ने अब्राहम और उसके वंशजों के साथ वाचा बाँधी थी जिसके कारण उनका खतना आवश्यक था (उत्पत्ति 17), और मूसा अब्राहम का एक वंशज था। यदि मूसा ने अपने पुत्रों में से एक का भी खतना नहीं किया था, तो वह परमेश्वर का आज्ञापालन न करने का दोषी था।

खतना मूसा की पत्नी **सिप्पोरा** के द्वारा किया गया, जिसने **अपने पुत्र की खलड़ी को काट डाला**। इसी कारण मूसा का जीवन उसकी पत्नी के द्वारा बच गया। खतने के बाद, उसने (खलड़ी) **को मूसा के पैरों पर फेंक दिया**। अधिकांश टिप्पणीकार यह विश्वास करते हैं कि इसने उसके क्रोध का संकेत दिया जो उसे इस

कार्य के करने पर था।

कोई निश्चित तौर पर यह नहीं जानता कि खतने के बाद जब सिप्पोरा ने मूसा को **लहूवाला पति** कहा तो उसका क्या अर्थ था। परिकल्पनाओं से अनुमान उत्पन्न होते हैं कि वह कह रही थी कि मूसा एक दोषी पति था, जिसने एक मिस्री को कई वर्षों पहले मार डाला था, इस विचार के लिए कि यह एक पारम्परिक मिद्यानी कहावत थी जिसे तब उपयोग किया जाता था जब एक दूल्हे को उसके विवाह के सम्बन्ध में खतना किया जाता था।[9] जॉन स्मिथ के द्वारा आकर्षक सुझाव दिया गया: "सिप्पोरा मूसा से साधारण तौर पर यह कह रही है कि, 'तू मेरा पति है जिसे मेरे पास एक लहू की वाचा के द्वारा मृतकों में से वापस लाया गया है-जो अब दूसरी बार मेरा हो चुका है।'"[10] 26वीं आयत में अन्तिम वाक्य इस लिए सम्मिलित किया गया प्रतीत होता है क्योंकि सिप्पोरा की कहावत पाठकों के लिए अच्छी तरह से परिचित थी। लेखक ने आशा कि थी कि उन्हें यह बताए जाने की आवश्यकता थी कि उसने क्यों इस कथन को कहा था।

दूसरे प्रश्न का उत्तर मूसा की निकट मृत्यु और उसके पुत्र के खतने के सम्बन्ध में "क्यों?" है, परमेश्वर ने मूसा को मार डालने का प्रयास क्यों किया, और यह घटना निर्गमन की पुस्तक में दर्ज क्यों गई? इस कहानी के "क्यों" का सम्बन्ध सम्भवतः (1) खतने का महत्व (2) और इस्राएल के अगुवे के द्वारा उन लोगों के लिए विश्वासयोग्य आज्ञाकारिता का एक अच्छा उदाहरण प्रस्तुत करने का महत्व है जिनकी अगुवाई करने के लिए उसे बुलाया गया था। यदि मूसा परमेश्वर की व्यवस्था के प्रति स्वयं आज्ञाकारी न रहा होता तो वह कभी भी परमेश्वर के लोगों की परमेश्वर के तरीके से सफलतापूर्वक अगुवाई नहीं कर सकता था। उसकी अनाज्ञाकारिता उसके पुत्र के खतना रहित होने से प्रमाणित होती। वारेन डब्लू. विएर्स्बे ने टिप्पणी करते हुए कहा कि, "यदि मूसा यहोवा की किसी एक मूल आज्ञा के प्रति अनाज्ञाकारी होता तो वह इस्राएल के लोगों की अगुवाई कभी नहीं कर सकता था (उत्पत्ति 17:10-14)।"[11] पहले पाठकों के लिए, कहानी में आज्ञाकारिता के महत्व पर ज़ोर दिया गया और विशेषतः खतने के अद्‌भुत महत्व को नाटकीय रूप से प्रस्तुत किया गया।[12]

यह कहानी पुस्तक की अन्य घटनाओं से जुड़ती हुई प्रतीत होती है। उदाहरण के लिए, इसमें मूसा के पुत्र के खतने के सम्मिलित होने के तुरंत बाद शब्द दर्ज करता है कि परमेश्वर ने मिस्र के पहलौठों को चेतावनी दी। मूसा का जीवन एक ऐसे कार्य के द्वारा बचाया गया जिसमें लहू का बहाया जाना सम्मिलित था, और इसके बाद मूसा को "लहूवाला पति कहा गया।" इसी प्रकार से, इस्राएल दसवीं विपत्ति के प्रतिशोध से एक मेमने का लहू बहाने के कारण बच गया और इसके बाद एक प्रकार से, वह परमेश्वर से "विवाहित" हो गया, हालाँकि निर्गमन उन स्थितियों में इस्राएल के चुनाव का चित्रण नहीं बनाता। इसके आगे, जब यह घटना घटी, मूसा मिस्र में प्रवेश करने के लिए जंगल को छोड़ रहा था, उसे इसके लिए मिद्यान के याजक से अनुमति मिली थी। बाद में, जब लहू बहाया गया और पहलौठा मर गया, मूसा मिस्र छोड़कर जंगल में प्रवेश कर रहा था। उसे फ़िरौन से

अनुमति मिली थी, जिसे मिस्र में एक देवता समझा जाता था और हो सकता है कि उसके पास याजकीय कार्य थे। ये समानताएं संयोगवश नहीं हो सकतीं।

हारून, मूसा, और लोग (4:27-31)

[27]तब यहोवा ने हारून से कहा, "मूसा से भेंट करने को जंगल में जा।" वह गया और परमेश्वर के पर्वत पर उससे मिला और उसको चूमा। [28]तब मूसा ने हारून को यह बतलाया कि यहोवा ने क्या क्या बातें कहकर उसको भेजा है, और कौन-कौन से चिह्न दिखलाने की आज्ञा उसे दी है। [29]तब मूसा और हारून ने जाकर इस्राएलियों के सब पुरनियों को इकट्ठा किया। [30]और जितनी बातें यहोवा ने मूसा से कही थीं वह सब हारून ने उन्हें सुनाईं, और लोगों के सामने वे चिह्न भी दिखलाए। [31]और लोगों ने उनका विश्वास किया; और यह सुनकर कि यहोवा ने इस्राएलियों की सुधि ली और उनके दु:खों पर दृष्टि की है, उन्होंने सिर झुकाकर दण्डवत् किया।

आयतें 27, 28. परमेश्वर ने **हारून** को **परमेश्वर के पर्वत** - प्रत्यक्ष तौर पर सीनै पर्वत, या होरेब पर्वत पर **मूसा** से मिलने भेजा। जिस देश, मिद्यान से मूसा यात्रा कर रहा था वह, अवश्य ही पर्वत के पूर्व में रहा होगा। हारून निस्संदेह अपने भाई से पुनर्मिलाप को लेकर "आनन्दित" था और (4:14) और उसका एक पारम्परिक **चुम्बन** से अभिवादन किया। मूसा ने हारून को वह सब बताया परमेश्वर ने उसे बताया था, और वे साथ मिलकर मिस्र को लौट गए ताकि इस्राएल के लोगों को आगामी छुटकारे का समाचार दे सकें।

आयत 29-31. पुरनियों को एकत्र करने के बाद, **मूसा और हारून** ने **यहोवा के वचनों** को उन पर प्रकट किया और इसके साथ ही उन **चिह्नों को भी दिखाया** जो परमेश्वर ने उन्हें दिए थे। इसके परिणाम स्वरूप, उन्होंने उन बातों पर विश्वास करने के द्वारा जो मूसा और हारून ने कही थीं उचित व्यवहार किया। चूंकि मूसा का आगमन इस बात का प्रमाण था कि परमेश्वर ने उनकी पुकारें सुन ली थीं (2:23), **उन्होंने सर झुकाकर दंडवत किया और आराधना की**। इसी कारण, अध्याय 4, एक उच्च स्वर पर समाप्त होता है। परमेश्वर ने अपने लोगों की पुकारें सुन ली थीं! वह उनकी पीड़ा से परिचित था, और उसने एक चमत्कार-करने वाले-छुटकारा देने वाले को भेज दिया था! इस्राएल के लोगों की आशाएं उच्च थीं! अफ़सोस, उनकी आशाएं शीघ्र पूरी नहीं होंगी।

अनुप्रयोग

बहाने (अध्याय 3; 4)

जिस प्रकार मूसा ने परमेश्वर से प्रश्न किए उनका प्रयोग, बहाने बनाने पर एक सन्देश का परिचय देने के लिए किया जा सकता है। यह पाठ, मूसा से लेकर बाइबल

के अन्य चरित्रों - आदम, हारून, शाऊल और वे लोग जिन्हें भोज के लिए आमन्त्रित किया गया था (लूका 14:16-24) के द्वारा और अन्य लोगों के द्वारा बहाने बनाने के बारे में बताता है फ़िर उन लोगों के द्वारा बहाने बनाने की ओर आगे बढ़ता है जो वर्तमान में मसीह नहीं बनने के लिए अथवा मसीही लोगों के समान विश्वासयोग्य नहीं होने के कारण मसीही विश्वास को स्वीकार नहीं करने के लिए अनेक बहाने बनाते हैं।

अन्य सम्भावना यह है कि एक सम्पूर्ण पाठ, आज के लोग जिस प्रकार बहाने बनाते हैं उनकी तुलना में मूसा के द्वारा बहाने बनाने के बारे में समर्पित करना है (1) मूसा ने पूछा, "मैं कौन हूँ?" कुछ लोग ऐसा विश्वास करते हैं कि वे अयोग्य हैं, क्योंकि वे विचार नहीं करते कि परमेश्वर की सामर्थ उन्हें योग्य बना सकती है। (2) "तुम कौन हो?" कुछ लोग इसका प्रत्युत्तर नहीं देते क्योंकि वे परमेश्वर के स्वभाव को समझ नहीं पाते। (3) "वे विश्वास नहीं करेंगे।" सम्भावित रुप से इस बहाने के निकट की बात यह है "मैं क्यों विश्वास करूँ?" परमेश्वर हमारे सम्मुख चिन्हों का प्रस्ताव रखता है जिनका रिकॉर्ड बाइबल में दर्ज किया गया है जिससे कि विश्वास करने में हमें सहायता मिले। (4) "मैं बोलने में निपुण नहीं हूँ।" "मैं नहीं कर सकता" परिस्थिति का लक्षण अनेक लोगों को मसीही व्यक्ति बनने से अथवा मसीही व्यक्ति के रुप में उनकी ताकत से दूर रखता है। (5) "किसी और को भेज दे।" इस बात की गहराई यह है कि कुछ लोग परमेश्वर की बुलाहट का उत्तर नहीं देना चाहते। उन्हें चाहिए कि वे यह बात सीखें कि जो कार्य परमेश्वर आपसे करवाना चाहता है उसे आपके लिए कोई और व्यक्ति नहीं कर सकता।

परमेश्वर से प्रश्न-उत्तर करना (अध्याय 3; 4)

क्या "परमेश्वर से प्रश्न-उत्तर करना" अथवा उससे तर्क-वितर्क करना सही है? कुछ कार्य के लिए जो योजना उसने बनाई है उसके विषय में क्या हमें उससे बात करने का प्रयास करना चाहिए? मूसा ने ऐसा ही किया परन्तु परमेश्वर उसके साथ धीरज धरे हुए था। अय्यूब ने ऐसा ही किया परन्तु परमेश्वर उसके साथ धीरज धरे हुए था। सम्भावित रुप से हम भी अपने हृदय की सच्ची भावनाओं को व्यक्त करने में अनिच्छा प्रकट करते हैं जब हम प्रार्थना में परमेश्वर के पास जाते हैं। हमें चाहिए कि हम अधिक ख़ुले रूप से और साहस के साथ परमेश्वर से बात करें जैसा मूसा ने किया। परमेश्वर से साहस के साथ बात करना विश्वास को दिखाता है न कि विश्वास की कमी दिखाता है। अन्त में मुख्य प्रश्न यह नहीं है कि "क्या हमने परमेश्वर से 'प्रश्न-उत्तर किया'?" परन्तु "क्या अन्त में हम परमेश्वर की इच्छा के प्रति समर्पित हुए?" मूसा समर्पित हुआ और अय्यूब भी समर्पित हुआ। हमें भी ऐसा ही करना चाहिए।

वर्तमान में परमेश्वर की बुलाहट (अध्याय 3; 4)

क्या मूसा के समान हम भी परमेश्वर के द्वारा बुलाए गए हैं? एक अर्थ में, सब

लोग सुसमाचार के द्वारा मसीही बनने के लिए बुलाए गए हैं (1 थिस्स. 2:14)। वाल्डमर जानज़ेन ने लिखा, "परमेश्वर की बुलाहट, यीशु मसीह के द्वारा प्रत्येक व्यक्ति तक पहुँचाई गई है।"[13] जब हम मसीही व्यक्ति बन जाते हैं तब हम "बुलाए" गए लोग कहलाते हैं (1 कुरि. 1:9; इफ़ि. 4:1; कुलु. 3:15)। तब हमें परमेश्वर के "चुने हुए" लोगों के रुप में जाना जाता हैं (कुलु. 3:12; KJV)। अन्य अर्थ में, हममें से प्रत्येक व्यक्ति को कलीसिया में एक विशेष क्षमता में सौभाग्य के साथ "बुलाया गया" है जिससे कि जो विशेष वरदान हमें मिले हैं उनका हम प्रयोग कर सकें। एक मसीही व्यक्ति बनने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को चाहिए कि वह परमेश्वर की बुलाहट को सुनें और स्वयं के जीवन के लिए परमेश्वर की "बुलाहट" को स्वीकार करे।

"तेरे हाथ में वह क्या है?" (4:2)

परमेश्वर ने अपने लोगों को मिस्र से निकाल लाने के लिए मूसा को बुलाया, परन्तु परमेश्वर की बुलाहट के प्रति मूसा अनिच्छुक था। एक भाग में, इसका एक कारण यह था कि इस काम को करने के लिए वह स्वयं को अयोग्य महसूस कर रहा था। 4:1 में उसने पूछा, "वे मेरा विश्वास नहीं करेंगे ... ?" परमेश्वर का उत्तर था "तेरे हाथ में वह क्या है?" मात्र चरवाहों की एक लाठी - क्या यह पर्याप्त है! इस्राएल को छुड़ाने के लिए फ़िर भी यह परमेश्वर का यन्त्र बन गई। मूसा को चाहिए था कि वह यह सीखे कि चाहे हम कितने ही अयोग्य हों अथवा स्वयं को कितना ही अयोग्य क्यों न समझें, परमेश्वर जो करना चाहता है उसे पूरा करने के लिए वह किसी भी वस्तु को इस्तेमाल कर सकता है। हमें चाहिए कि हम निम्नलिखित सच्चाइयों को सीखें:

प्रत्येक व्यक्ति के हाथ में कुछ हैं। हम सब के पास कुछ गुण अथवा वरदान हैं जिन्हें हम परमेश्वर की सेवा में प्रयोग में ले सकते हैं। तोड़ों का दृष्टान्त हमें सिखाता है कि इस प्रकार के लोग हैं जिनके पास "पाँच-तोड़े" हैं, "दो-तोड़े" हैं और "एक-तोड़ा" है; परन्तु परमेश्वर के राज्य में ऐसे कोई लोग नहीं हैं जो "शून्य-तोड़े" के साथ हों। (धन के लिए तोड़ा शब्द काम में लिया जाता है परन्तु यहाँ पर शिक्षा प्राप्ति के लिए तोड़ा शब्द "योग्यताओं" के अर्थ में काम लिया जा सकता है।) कलीसिया के प्रत्येक सदस्य को परमेश्वर ने एक तोड़ा अथवा गुण दिए हैं जिनका प्रयोग उसकी सेवा में किया जा सकता है (रोमियों 12:3-8)। किसी विशेष वरदान अथवा योग्यता की कमी का अर्थ यह नहीं है कि देने के लिए हमारे पास कुछ भी नहीं है (देखें प्रेरितों 3:6)।

हमारे हाथों में जो कुछ भी है उसके लिए परमेश्वर मन रखता है कि उसे हम काम में लें। जो गुण हमारे पास हैं उनका प्रयोग मसीह की देह के निर्माण के लिए किया जाना चाहिए (देखें रोमियों 12:3-8; 1 कुरि. 12; इफ़ि. 4:11-16; 1 पतरस 4:10, 11)। जो कुछ भी हमारे पास है उसे परमेश्वर अपनी महिमा के लिए अपनी सेवा में इस्तेमाल कर सकता है। अगर परमेश्वर अपने लोगों को छुड़ाने के लिए चरवाहे की एक लाठी का प्रयोग कर सकता है तो वह हमारे गुणों को,

हमारी शिक्षा, हमारे व्यवसाय और हमारे सम्बन्धों को अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए इस्तेमाल कर सकता है। अगर आप इस प्रकार कहने की ओर झुकाव रखते हैं, जैसे मूसा ने कहा, "परमेश्वर मुझे इस्तेमाल नहीं कर सकता क्योंकि मैं कोई भी काम नहीं कर सकता," तब इसके बारे में सोचें: बिलाम से बात करने के लिए अगर परमेश्वर एक गदही का प्रयोग कर सकता है तो निश्चित रुप से वह कुछ अर्थपूर्ण तरीके से आपको भी इस्तेमाल कर सकता है।

जो कुछ भी हम परमेश्वर को देते हैं उसके उपयोग को वह गुणात्मक रुप से बढ़ा देता है। मूसा से परमेश्वर ने जब बात की उससे पहले अगर किसी ने मूसा से पूछा होता, "यह लाठी किस काम के लिए अच्छी है?" तब हो सकता है कि वह यह उत्तर देता, "यह भेड़ों की देख-भाल करने के लिए अच्छी है।" उसने यह सोचा भी नहीं होगा कि किस प्रकार परमेश्वर इसके उपयोग को बढ़ा सकता है। परमेश्वर ऐसा कर सकता है और उसने ऐसा किया। इसी प्रकार वह आपकी उपयोगिता को अपने काम के लिए बढ़ा सकता है। जिस प्रकार पाँच हज़ार लोगों को खिलाने के लिए यीशु ने वहाँ पर एक लड़के की रोटियों और मछली को गुणात्मक रुप से बढ़ा दिया (यूहन्ना 6:8-14), उसी प्रकार जो कुछ आप परमेश्वर को देते हैं उसके उपयोग को वह गुणात्मक रुप से बढ़ा सकता है।

तेरे हाथ में वह क्या है? आपके हाथ में जो कुछ भी हो, मैं आपसे बलपूर्वक आग्रह करूँगा कि आप उसे परमेश्वर को दे दें - परन्तु इससे पहले यह आवश्यक है कि आप स्वयं को प्रभु के हाथ में दें और कुछ भी रख न छोड़े (रोमियों 12:1, 2; 2 कुरि. 8:5)।

समाप्ति नोट्स

[1]नहूम एम. सरना, *एक्सप्लोरिंग एक्सोडस: द ओरीजिन्स ऑफ़ बिब्लिकल इजराएल* (न्यू यॉर्क: स्चोकेन बुक्स, 1996), 54-61. [2]वाल्डेमर जेंज़ेन के अनुसार, यह अंतर विचारपूर्वक था, *एक्सोडस,* बिलीवर्स चर्च बाइबल कमेंट्री (स्कॉटडेल, पेंसिल्वेनिया: हेराल्ड प्रेस, 2000), 72. [3]उपरोक्त, 70-71. [4]नोट्स ऑन निर्गमन 4:24-26 एंड 4:24, ब्रूस एम्. मेत्ज़ेगर एंड रोलैंड ई. मर्फी. सम्पादक *द न्यू ऑक्सफ़ोर्ड ऐनोटेटेड बाइबल विद एपोक्रिफा,* रिवाइज्ड एंड इनलार्जड (न्यू यॉर्क: ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1991), 74. [5]जूलियन मोर्गनस्टर्न, "द, 'ब्लडी हज्बैंड' (?) (निर्गमन 4:24-26), वन्स अगेन," *हिब्रू यूनियन कॉलेज एनुअल* 34 (1963): 66-70. [6]हान्स कोस्माला, "द, 'ब्लडी हज्बैंड'," *वीटस टेस्टामेंटम* 12 (1962): 20-22. [7]ग्रेगरी बी. स्मिथ, "एन एक्सीजिस ऑफ़ एक्सोडस 4:24-26," अनपब्लिश्ड पेपर फॉर ए ग्रेजुएट क्लास ऑन एक्सोडस (नेशविल: डेविड लिपस्कोम्ब यूनिवर्सिटी, 1991), 5. स्मिथ साईटेड रब्बिनिक सोर्सेस. [8]सी. हाऊटमैन, "निर्गमन 4:24-26 एंड इट्स इंटरप्रिटेशन," *जर्नल ऑफ़ नार्थवेस्ट सेमीटिक लैंग्वेजेस* 11 (1985): 88-89. [9]स्मिथ, 10-11. [10]जॉन स्मिथ, *द परमानेंट मेसेज ऑफ़ एक्सोडस एंड स्टडीज़ इन द लाइफ ऑफ़ मोसेस* (सिनसिनाटी: जेंनिग्स एंड पाई, 1903), 83.

[11]वारेन डब्लू. विएर्स्बे, *बी डिलीवर्ड* (कोलोराडो स्प्रिंग्स, कॉलोराडो: विक्टर, 1998), 21. [12]ब्रेवार्ड एस. चाइल्डस, *द बुक ऑफ़ एक्सोडस: अ क्रिटिकल, थियोलोजिक्ल कमेन्ट्री,* द ओल्ड टेस्टामेंट लाइब्रेरी (लुइसविल: वेस्टमिन्स्टर प्रेस, 1974), 104. [13]जानज़ेन, 79.